# वार्षिक प्रतिवेदन
# 2018-19

## राष्ट्रीय गतिशील दिव्यांगजन संस्थान

# विषय वस्तु


| | | |
|---|---|---|
| 1 | प्रस्तावना | iii |
| 2 | उद्देश्य | iv |
| 3 | गतिविधियों की झलकियाँ | v |
| 4 | कार्यकारी सारांश | vi-xv |
| 5 | अध्याय -I : पुनर्वास सेवाएं | 1- 46 |
| | • चिकित्सा पुनर्वास विभाग | 1 |
| | • भौतिक चिकित्सा विभाग | 3 |
| | • व्यवसायिक चिकित्सा विभाग | 14 |
| | • कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग विभाग | 21 |
| | • सामाजिक आर्थिक पुनर्वास सेवा विभाग | 27 |
| | • पुनर्वास नर्सिंग विभाग | 41 |
| | • पुनर्वास अभियांत्रिकी विभाग | 45 |
| 6 | अध्याय -II : मानव संसाधन विकास | 47 |
| 7 | अध्याय -III : अनुसंधान एवं विकास इकाई | 52 |
| 8 | अध्याय -IV: पुस्तकालय सूचना एवं प्रलेखीकरण सेवाएं | 54 |
| 9 | अध्याय -V: विस्तारण एवं सुदूरपूर्व सेवाएं | 56 |
| 10 | अध्याय -VI: प्रशासन | 69-81 |
| | • संगठनात्मक चार्ट | 69 |
| | • स्टाफ की स्थिति | 70 |
| | • सिविल, विद्युतीय अभियांत्रिकी एवं सम्पदा | 73 |
| | • राजभाषा अनुभाग | 75 |
| | • महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कार्यक्रमों का समारोह पालन | 78 |
| | • सूचना के अधिकार पर की गई कार्रवाई | 80 |
| | • प्रबंधन | 81 |
| 11 | अध्याय -VII: क्षेत्रीय केन्द्र | 83 |
| 12 | अध्याय -VIII: संयुक्त क्षेत्रीय केन्द्र | 102 |
| 13 | अध्याय -IX: वार्षिक लेखा | 125 |

# प्रस्तावना

विशेषतः दिव्यांगजनों के अधिकार के सम्मति के अंगीकृत होने के पश्चात् दिव्यांगजनों को सशक्त बनाने के प्रयासों के गति में वैश्विक रुप से वृद्धि हुई। भारत में, अंगीकृत होने के सिद्धांतों के अनुसार दिव्यांगजनों के अधिकार के अधिनियम का एक प्रारूप तैयार किया गया और इसे वर्ष 2016 में पारित किया गया एवं इसे दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 का नाम दिया गया। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि ने न केवल कल्याण आधारित गतिविधि को प्रदान किया बल्कि अधिकार आधारित दृष्टिकोण को सुनिश्चित करने की दिशा में और अधिक मार्ग दर्शन किया।

मूल्यों, विशेषज्ञता और अनुभव के दृढ सिद्धांतों के साथ, राष्ट्रीय गतिशील दिव्यांगजन संस्थान, कोलकाता (रा.ग.दि.सं.) दिव्यांजनों की सेवा में एक वर्ष और अग्रसर हुआ। रा.ग.दि.सं. नीतियों, योजनाओं, अनुसंधानों, मानव संशाधन विकास एवं सेवाओं को क्रियान्वित करने के लिए दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ा। आज रा.ग.दि.सं. देश के पूर्वोत्तर क्षेत्रों में पुनर्वास सेवाओं को प्रदान कराने का प्रथम स्थान प्राप्त कर चुका है।

रा.ग.दि.सं. वार्षिक रिपोर्ट 2018–2019 में पिछले वर्ष की खबरों और घटनाओं को साझा किया गया है।

# संस्थान का परिचय

राष्ट्रीय गतिशील दिव्यांगजन संस्थान (रा.ग.दि.सं.), विगत में राष्ट्रीय अस्थि विकलांग संस्थान (रा.अ.वि.सं.) की स्थापना वर्ष 1978 मे समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन सोसाइटीज पंजीकरण अधिनियम 1961 के अन्तर्गत एक स्वायत्त निकाय के रूप में कोलकाता, पश्चिम बंगाल में हुयी। रा.ग.दि.सं., केन्द्र सरकार के अग्रिम संस्थानों में से एक है जिसे दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अधीन वित्तीय सहायता प्राप्त है । यह संस्थान बन हुगली कोलकाता में पूर्ववर्ती पी.एन.राय ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल के परिसर में स्थित हैं । यह संस्थान गतिशील दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्यरत एक शीर्ष संस्थान है। यह संस्थान दिव्यांगजनों के लिए अपने संयुक्त क्षेत्रीय केन्द्रों, क्षेत्रीय केन्द्रों एवं क्षेत्रीय अध्याय के माध्यम से पूर्वोत्तर क्षेत्रों तथा उत्तराखण्ड राज्य में पुनर्वास संबंधित गतिविधियों को प्रोत्साहन प्रदान करता है।

# उद्देश्य

संस्थान की स्थापना निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ हुई:

- अस्थि दिव्यांगजनों की शिक्षा तथा पुनर्वास के सभी पहलुओं में अनुसंधान को संचालित, प्रायोजित, समन्वय या सहायता प्रदान करना जिसमें सामंजस्य अथवा गतिशीलता की समस्याओं के साथ न्यूरोलॉजिकल दिव्यांगजनों के लक्षण भी परिलक्षित होते हैं।

- बायोमेडिकल इंजीनियरिंग, मुख्यतः उपकरणों का प्रभावशाली मूल्यांकन या उचित सर्जिकल या चिकित्सा पद्धतियों अथवा नए उपकरणों के विकास में अनुसंधान को जारी रखना उसे प्रायोगिक, समन्वय या सहायता प्रदान करना।

- अस्थि दिव्यांगजनों की शिक्षा, प्रशिक्षण या पुनर्वास को बढ़ावा देने हेतु प्रशिक्षु तथा शिक्षकों, रोजगार अधिकारियों, मनोचिकित्सकों, व्यवसायिक परामर्शदाताओं तथा संस्थान द्वारा आवश्यक समझे जाने वाले इस प्रकार के अन्य कर्मियों जिसकी शिक्षा, परीक्षण एवं पुनर्वास में आवश्यकता हो तो अस्थि दिव्यांगजनों हेतु संचालित अथवा प्रायोजित करना।

- अस्थि दिव्यांगजनों के शिक्षा, पुनर्वास या चिकित्सा के किसी पहलू को बढावा देने हेतु किसी विशेष अथवा सभी उपकरणों के निर्माण तथा वितरण या बढावा अथवा इस हेतु सहायता प्रदान करना।

# गतिविधियों की झलकियाँ

इस संस्थान की गतिविधियाँ वृहत रुप से निम्न क्षेत्रों में सन्निहित हैः

1. मानव संसाधन विकास
2. पुनर्वास सेवाएं
3. अनुसंधान एवं विकास
4. पुस्तकालय, प्रलेखीकरण एवं सूचना का विस्तार
5. सुदूरवर्ती एवं विस्तारण सेवाएं
6. जागरूकता कार्यक्रम
7. विद्यार्थी नियोजन

उपरोक्त गतिविधियाँ संस्थान के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न विभागों, इकाइयों, संयोजित क्षेत्रीय केंद्रों, क्षेत्रीय केन्द्रों एवं क्षेत्रीय अध्यायो द्वारा की जाती हैं।

- चिकित्सा पुनर्वास
- भौतिक चिकित्सा
- व्यवसायिक चिकित्सा
- कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग
- सामाजिक आर्थिक पुनर्वास
- पुनर्वास नर्सिंग
- पुनर्वास अभियांत्रिकी
- पुस्तकालय, सूचना एवं प्रलेखीकरण
- सुदूरवर्ती इकाई
- विद्यार्थी नियोजन इकाई

# वार्षिक प्रतिवेदन 2018–19 का सारांश
# राष्ट्रीय गतिशील दिव्यांगजन संस्थान, कोलकाता

राष्ट्रीय गतिशील दिव्यांगजन संस्थान पूर्व नाम राष्ट्रीय अस्थि दिव्यांगजन संस्थान की स्थापना वर्ष 1978 मे समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन सोसाइटीज पंजीकरण अधिनियम 1961 के अन्तर्गत एक स्वायत्त निकाय के रूप में कोलकाता, पश्चिम बंगाल में किया गया था। रा.ग.दि.सं., भारत सरकार के दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के द्वारा वित्त पोषित एक प्रमुख केन्द्र सरकार का संगठन है।

इस संस्थान की गतिविधियाँ वृहत रुप से निम्न क्षेत्रों में सन्निहित है:

1) मानव संसाधन विकास
2) पुनर्वास सेवाएं
3) अनुसंधान एवं विकास
4) पुस्तकालय प्रलेखीकरण एवं सूचना का विस्तार
5) सुदूरवर्ती एवं विस्तारण सेवाएं
6) जागरूकता पीढ़ी
7) विद्यार्थी नियोजन

उपरोक्त गतिविधियाँ संस्थान के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न विभागों, इकाइयों, समेकित क्षेत्रीय केंद्र, क्षेत्रीय केन्द्रों एवं क्षेत्रीय अध्यायों द्वारा की जाती हैं।

- चिकित्सा पुनर्वास
- भौतिक चिकित्सा
- व्यवसायिक चिकित्सा
- कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग
- सामाजिक आर्थिक पुनर्वास
- पुनर्वास नर्सिंग
- पुनर्वास अभियांत्रिकी
- पुस्तकालय, सूचना एवं प्रलेखीकरण
- सुदूरवर्ती इकाई
- विद्यार्थी नियोजन कक्ष

## क. संस्थान द्वारा प्रदत्त पुनर्वास सेवाएं

चिकित्सा पुनर्वास विभाग ने दिव्यांगजनों के वृहत पुनर्वास के लिए वाह्य रोगी विभाग में मामला निर्धारित होने के पश्चात अन्य विभागों के साथ समन्वय किया।

**वर्षानुसार लाभार्थियों के विवरणः**

| वाह्य रोगी विभाग / अंतः रोगी विभाग द्वारा प्रदत्त सेवायें | 2016-17 | 2017-18 | **2018-19** |
|---|---|---|---|
| **मूल्यांकन :** | | | |
| नये रोगीजन | 22362 | 22063 | **22722** |
| अनुवर्ती रोगीजन | 27527 | 28033 | **26617** |
| **सुधारात्मक शल्य :** | | | |
| रोगियों की संख्या | 355 | 440 | **440** |
| मेजर शल्य चिकित्सा | 194 | 248 | **270** |
| माइनर शल्य चिकित्सा | 2298 | 2436 | **2006** |
| **भौतिक चिकित्सा :** | | | |
| नये रोगीजन | 12419 | 12839 | **14948** |
| अनुवर्ती रोगीजन | 32170 | 42537 | **30329** |
| सेवायें (बैठक/सेवाओं की संख्या) | 56554 | 60698 | **63244** |
| **व्यावसायिक चिकित्सा :** | | | |
| नये रोगीजन | 3056 | 3050 | **3210** |
| अनुवर्ती रोगीजन | 15081 | 16471 | **16387** |
| सेवायें (बैठक/सेवाओं की संख्या) | 46057 | 42780 | **43406** |
| **कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग :** | | | |
| कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग | 1724 | 1927 | **2337** |
| उच्च तकनीकी कृत्रिम अंग | 03 | 06 | **00** |
| पुनर्वासीय उपकरण | 242 | 311 | **267** |
| **सामाजिक आर्थिक पुनर्वास :** | | | |
| व्यवसायिक परामर्शदान एवं दिशा निर्देशन | 1417 | 1429 | **1380** |
| कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम | जारी है | 1170 | |
| सामाजिक मुल्यांकन एवं परामर्शदान | 4599 | 2764 | **3599** |
| नियोजन प्रकोष्ठ/रोजगार | 50 | 17 | |
| **नैदानिक सेवायें :** | | | |
| एक्स–रे | 7728 | 11455 | **11775** |
| पैथोलॉजिकल परीक्षण | 19096 | 31509 | **29782** |
| इ.एम.जी, एन.सी.वी. | 3727 | 4652 | **6541** |
| **पुस्तकालय एवं सूचना सेवायें :** | | | |
| लाभार्थी | 26573 | 38110 | **35337** |
| लाभार्थी सेवायें | 28020 | 37799 | **28139** |
| **सुदूरवर्ती शिविर सेवायें :** | | | |
| सहायक यंत्र/उपयंत्र वितरण किये गये | 3748 | 3482 | **4694** |
| सूचना के अधिकार अनुभाग | 50 | 57 | 86 |

वर्ष 2015–16 में पंजीकृत दिव्यांगजनों के प्रशिक्षण को वर्ष 2016–17 में जारी रखा गया और वर्ष 2017–18 में आबंटित संख्याओं को वर्ष 2018–19 तक जारी था। नए लक्ष्य को आबंटित नहीं किया गया।

## शिविरों द्वारा प्रदत्त सेवाएं:

सुदूरवर्ती सेवा इकाई दिव्यांगजनों के लिए साधनों/यंत्रों के खरीद/फिटिंग के लिए भारत सरकार के एडिप योजना के अन्तर्गत मूल्यांकन, अभिनिर्धारण एवं वितरण शिविरों को संचालित करता है एवं समुदाय सांझेदारों के लिए विभिन्न क्षेत्रों में दिव्यांगता पर संवेदीकरण तथा पुनर्वास कार्यक्रम आयोजित करता है। इस वर्ष के दौरान एडिप योजना के अन्तर्गत पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, त्रिपुरा एवं नागालैण्ड में शिविरों को संचालित किया गया जिसमें कुल 3066 की संख्या में दिव्यांगजन 4694 की संख्या में साधनों एवं यंत्रों को प्राप्त कर लाभान्वित हुए।

## शिविरों के विवरण:

| राज्य के नाम | कुल शिविरों की संख्या | कुल अभिनिर्धारण शिविरों की संख्या | कुल वितरण शिविरों की संख्या |
|---|---|---|---|
| पश्चिम बंगाल | 48 | 18 | 30 |
| आन्ध्र प्रदेश | 03 | --- | 03 |
| उत्तर प्रदेश | 02 | --- | 02 |
| त्रिपुरा | 04 | 02 | 02 |
| नागालैण्ड | 04 | 03 | 01 |
| कुल | **61** | **23** | **38** |

## शिविरों की संख्या

| राज्य के नाम | कुल शिविरों की संख्या | कुल अभिनिर्धारण शिविरों की संख्या | कुल अभिनिर्धारण शिविरों की संख्या | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| **पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, त्रिपुरा, नागालैण्ड** | **61** | **23** | **38** | **2018-19** |
| पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश | 65 | 38 | 27 | 2017-18 |
| पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश | 55 | 33 | 22 | 2016-17 |

## ख. मानव संसाधन विकासः

**संस्थान के मानव संसाधन विकास कार्यक्रम को वृहत रुप से दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता हैः**

1. **दीर्घकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम**– भौतिक चिकित्सा, व्यवसायिक चिकित्सा, कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग ऑर्थोपेडिक पुनर्वास नर्सिंग, डिप्लोमेट नेशनल बोर्ड इन पीएमआर, पुनर्वास प्रबंधन में स्नातक स्तर एवं स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम सम्मिलित इन पाठ्यक्रमों में कुल 182 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

| क्र.सं. | पाठ्यक्रम का नाम | प्रवेश क्षमता | प्रवेश | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | 2016 | 2017 | 2018 |
| 1. | भौतिक चिकित्सा में स्नातक | 52 | 51 | 52 | **52** |
| 2. | भौतिक चिकित्सा में स्नातकोत्तर | 06 | 06 | 06 | **06** |
| 3. | व्यवसायिक चिकित्सा में स्नातक | 51 | 37 | 46 | **51** |
| 4. | व्यवसायिक चिकित्सा में स्नातकोत्तर | 06 | 05 | 05 | **06** |
| 5. | कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग में स्नातक | 34 | 30 | 34 | **33** |
| 6. | कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग में स्नातकोत्तर | 06 | 06 | 05 | **04** |
| 7. | विज्ञान में स्नातकोत्तर (ऑर्थोपेडिक पुनर्वास नर्सिग) | 10 | 10 | 10 | **10** |
| 8. | दिव्यांगता पुनर्वास प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा | 15 | 15 | 13 | **15** |
| 9. | डिप्लोमेट ऑफ नेशनल बोर्ड (भौतिक चिकित्सा एवं पुनर्वास) | 08 | 03 | 03 | **05** |

2. **अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम**– वर्ष 2018–2019 के दौरान, कुल 22 अलग–अलग कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें 2019 प्रतिभागी लाभान्वित हुए। इन कार्यक्रमों को पेशेवरों के जानकारियों को अद्यतन करने, क्षमता बढ़ाने एवं संवेदीकरण के लिए आयोजित किया गया।

## ग. अनुसंधान एवं विकासः

**विभिन्न विभागों के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों द्वारा संचालित अनुसंधान अध्ययनः**

1. कम्परेटिव स्टडी ऑफ मोटर कंट्रोल एक्सर्साइज एंड ग्लोबल कोर स्टेब्लाईजेशन एक्सर्साइज ऑन पेन, रोम एंड फंक्शन इन सब्जेक्ट्स विद क्रोनिक ननस्पेशिफिक लो बैक पेनः अ रेन्डोमाईज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल।
2. कम्पेयर द एफेक्टिवनेश ऑफ स्केपलर मोबिलाईजेशन वर्सस माइयोफेस्कियल रिलिज ऑफ सबस्केपलरिस ऑन पेन, रोम एंड फंक्शन इन सब्जेक्ट्स विद क्रोनिक फ्रोजेन सोल्डरः अ रेन्डोमाईज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल।
3. एफिकैसी ऑफ काईनसिओ–टैपिंग ओवर लिवेटर स्कैप्यल ट्रिगर प्वाईंट ऑन पेन, प्रेसर पेन थ्रेशोल्ड एंड फंक्शन इन क्रोनिक मेकानिकल नेक पेनः अ रेन्डोमाईज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल।
4. एफेक्टिवनेश ऑफ पाइलेट्स एक्सर्साइज प्रोग्राम ऑन पेन, फंक्शन एंड स्टेबाइलोमेट्रीक पैरामिटर इन सब्जेक्ट विद क्रोनिक नान–स्पेशिफिक लो बेक पेनः अ रेन्डोमाईज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल।
5. एफेक्ट ऑफ कैल्केनियल टैपिंग ऑन पेन, प्रेसर पेन थ्रेशोल्ड एंड फंक्शन इन सब्जेक्ट्स विद क्रोनिक प्लांटर फैशिटिसः अ रेन्डोमाईज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल।

6. लोंग टर्म एफिकैशी ऑफ रसियन करंट ऑन पेन, स्ट्रेंथ ऑफ क्वाड्रीसेप्स एंड फंक्शन इन सब्जेक्ट्स विद प्राइमरी नी ओस्टिओऑर्थिटिसः अ रेन्डोमाईज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल।
7. एफेक्ट ऑफ आर्म क्रेकिंग एक्टिविटी एलोंग विद व्हीलचेयर स्किल ट्रेनिंग ऑन व्हीलचेयर मोबिलिटी एमोंग व्हीलचेयर डिपेंडेंट पैराप्लेजिक्स।
8. एफेक्ट्स ऑफ ईएमजी बॉयोफिड्बैक ट्रेनिंग एंड मिरर थिरेपी ऑन फंक्शनल रिकवरी ऑफ हैंड इन स्ट्रोक सर्वाइवर्सः अ कम्प्रेटिव स्टडी।
9. एफेक्ट ऑफ प्रोप्रिओसेप्टिव ट्रेनिंग ऑन फंक्शनल स्टेटस एंड एडीएल इन पेशेंट विद नी ओस्टिओऑर्थिटिस (ओए) वियरिंग एलास्टिक बैंडेजेज।
10. एफेक्ट ऑफ काइनसिओटैपिंग ऑन जेनू रिकर्वेटम एंड फंक्शनल अम्बुलेशन इन चिल्ड्रेन विद हेमिप्लेजिक सीपी।
11. एफेक्ट ऑफ सेंशोरीमोटर ट्रेनिंग कम्बाईंड विद एरोबिक एक्सर्साइज प्रोग्राम ऑन क्वालिटी ऑफ लाइफ एंड एक्टिवीटिज ऑफ डेली लिविंग इन पेशेंट्स विद क्रोनिक नी ओस्टिओऑर्थिटिस।
12. अ कम्प्रेटिव स्टडी बिटवीन पटेल्ला टेंडोन बियरिंग सुप्रा कॉन्डाइलर (पीटीबी–एससी) एंड टोटल सर्फेश बियरिंग (टीएसबी) सोकेट ऑन एनर्जी एक्स्पेंडीचर इन सब्जेक्ट विद ट्रांस–टाईबॉयल एम्प्युटिज ऑन टू सर्फेश वाल्किंग।
13. अ कम्प्रेटिव स्टडी बिट्विन विलियम ऑर्थोसिस एंड माउल्डेडलम्बो–सेक्रल ऑर्थोसिस ऑन गैट काइनेटिक्स पैरामिटर्स एंड स्लीपेज इंडेक्स इन सब्जेक्ट्स विद स्पोंडाइलोलिस्थेसिस।
14. अ कम्प्रेटिव स्टडी बिट्विन टू डिफरेंट वेरिएंट्स ऑफ लोर रिएक्शन ऑर्थोसिस ऑन गैट काइनमेटिक्स एंड एक्टीवेशन प्रोफाईल ऑफ क्वाड्रीसेप्स मशल्स इन स्पेस्टीक सीपी विद क्रच गैट।
15. एफेक्ट्स ऑफ कस्टोमाइज्ड इनसोल ऑन फूट प्रेसर डिस्ट्रीब्यूशन एंड गैट काइनेटिक पैरामिटर्स इन सब्जेक्ट विद डायब्टिक्स न्यूरोपैथी।

## पत्रिकाओं में प्रकाशित अनुसंधानः


1. सरकार बी, मंगलम, ए.के. सहाय पी, एफिकैसी ऑफ मशल एनर्जी टेकनिक एज कम्पेयर्ड टू मायोफेस्कियल ट्रिगर प्वाईंट रिलीज इन क्रोनिक प्लांटर फैस्कीटिजः ए डबल ब्लाईंड रेन्डोमाइज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल. इंट जे हेल्थ सांइ. रेस. 2018य 8(6):128–136.
2. सरकार एन., सरकार बी., कुमार पी. एट अल. एफिकैसी ऑफ काईनसिओ–टैपिंग ऑन पेनः ए रेन्डोमाइज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल. इंट जे हेल्थ सांइ. रेस. 2018य 8(7):105–112.
3. पटेल एल., सरकार बी., कुमार पी. एट अल. नोर्मेटिव वैल्यूज ऑफ स्टार इग्जकर्जन बैलेंस टेस्ट इन योंग एडल्ट्सः ए क्रोस सेक्शनल स्टडी. इंट. जे. एड्व. रेस. 2018य 6(8): 206–214.
4. लाहा के., सरकार बी., कुमार पी. एट. अल. एफिकैसी ऑफ हिप अब्डक्टर एंड एक्स्टेंसर स्ट्रेंथनिंग ऑन पेन, स्ट्रेंथ एंड लोवर एक्स्ट्रमिटी फंक्शन इन पिरिफोर्मिश सिंड्रोमः ए रेन्डोमाइज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल. इंट जे हेल्थ सांइ. रेस. 2018य 8(9):80–88.
5. अल्गादिर ए.एच. अल–एजा ए. एस., अनवर एस., सरकार बी. रिलाइब्लिटी, वेलिडिटी एंड रेसपोंसिवनेश ऑफ थ्री स्केल्स फोर मिस्यूरिंग बैलेंस इन पेशेंट्स विद क्रोनिक स्ट्रोक। बीएमसी न्यूरोलॉजी (2018) 18:141.

## अनुसंधान परियोजनाएं:

### संपन्न परियोजनाएं : 01

1. **परियोजना शीर्षक:** इलेक्ट्रोनिक हैण्ड डिजाब्लीटी स्क्रोरर मशीन (इ–एचडीएसएम)
   **आउटकम्सः प्रोटोटाईप डेवलॉप्डः 01**

### जारी परियोजनाएं : 05

1. परियोजना शीर्षकः जैविक/अजैविक फाइबर रेंफोर्स्ड पॉलीमर नेनो–कॉम्पोजिट प्रोस्थेटिक का लो कोस्ट अड्वांस रनिंग ब्लेड्स का विकास एवं तुलना।
2. परियोजना शीर्षकः नैदानिक संभाव्यता का मूल्यांकन एवं एफेक्ट ऑफ न्यूरोमस्क्यूलर इलेक्ट्रीकल स्टीमुलेशन (एनएमईएस) थेरपी ऑफ क्वाड्रीसेप्स फिमोरिश (क्यूएफ) एंड टॉयबायलिस एंटेरियर (टीए) मसल ऑन इम्प्रूविंग गैट एंड फंकशनल आउटकम्स इन चिल्ड्रेन विद स्पेस्टीक सेरेब्रल पाल्सी।
3. परियोजना शीर्षकः क्वान्टिफिकेशन एंड अनैलिसिस ऑफ पैथोलॉजिकल गैट इन पर्सन विद लोकोमोटोर डिसेब्लीटीज यूजिंग साट कम्प्यूटिंग टूल्स एंड इन्स्ट्रूमेंटेड गैट अनालाईजर (लो कोस्ट प्रेसर सेंसर बेस्ड गैट मैट, फोर्स प्लेट, ईएमजी, इलेक्ट्रो–गॉनिऑमिटर और मेटाबॉलिक एनालाईजर)
4. परियोजना शीर्षकः आवश्यकता आधारित एसटीटी/वयस्क शिक्षा द्वारा एनएचएम के अधीन कार्यरत नर्सिंग कर्मचारियों में दिव्यांगता एवं पुनर्वास संबंधित जानकारियों के अन्तराल का अन्वेषण करना।
5. परियोजना शीर्षकः उत्तराखंड क्षेत्र में सहायक उपकरण और उपकरणों का उपयोग कर गतिशील दिव्यांगजन व्यक्तियों की सामाजिक आर्थिक स्थितियों का विश्लेषणः क्षे. के. देहरादून में एक पूर्वव्यापी अध्ययन टिहरी गढ़वाल, उत्तरकाशी हरिद्वार और देहरादून के जिलों में किया गया है।

### नई परियोजना का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया : 01

परियोजना शीर्षकः पश्चिम बंगाल के ग्रामीण / शहरी भागों में सहायक तकनीक का उपयोग करते हुए निचले अंगों में गति दिव्यांगता के साथ एससीआई / प्रौढ़ जनसंख्या पर श्रम–दक्षता संबंधी डिजाइन विकसित करने के लिए एक अवलोकन अध्ययन।

## दिव्यांगजनों के लिए कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमः

- कुल स्वीकृत प्रशिक्षार्थियों की संख्याः 1230
- कुल नामांकित प्रशिक्षार्थियों (दिव्यांगजन) की संख्या : 1170
- **मध्यवर्ती क्षेत्र**– पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार, असम
- **चयनित व्यवसाय का नाम**– खुदरा बिक्री सहयोगी, कमरा परिचारक, प्रेषित ट्रैकिंग कार्यकारी, फ्रन्ट ऑफिस सहयोगी, खुदरा भंडार प्रबंधक, खुदरा टीम लीडर, बहु–कुशल तकनीशियन (खाद् य प्रसंस्करण), खुदरा बिक्री सहयोगी, स्वींग मशीन चालक, ग्राहक सेवा प्रतिनिधि (कॉल सेंटर), हाउस किपिंग परिचारक (मैनुअल सफाई), सहायक सौंदर्य/स्वास्थ्य परामर्शदाता, जैम, जेली एवं केचअप प्रसंस्करण तकनीशियन, हस्त कशीदा, टी.वी. मरम्मत तकनीशियन। इस वर्ष पूर्ण की गई प्रमुख परियोजनाएं:

## इस वर्ष पूर्ण की गई प्रमुख परियोजनाएं:

- अइजोल, मिजोरम में दिव्यांगता अध्ययन केन्द्र का निर्माण।
- रा.ग.दि.सं., कोलकाता संस्थान के मुख्य इमारत (इन बैलेंस पोर्शन) के बाहरी भाग की मरम्मत।
- सीआरसी त्रिपुरा का नवीनीकरण कार्य।

हिन्दी अनुभाग ने अपने नियंत्रण में इस संस्थान के साथ क्षेत्रीय चैप्टर्स एवं संयोजित क्षेत्रीय केन्द्र में हिन्दी के प्रयोग के लिए सम्पूर्ण स्तरों पर निरंतर प्रयास किए। संस्थान में 14.09.2018 से 28.09.2018 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया।

क्षेत्रीय केन्द्र, अइजोल एवं नाहरलागुन  से भी क्रियाशील है जबकि एक क्षेत्रीय केन्द्र देहरादून से पूर्वोत्तर राज्यों के चैप्टर एवं क्रमशः उत्तराखण्ड से भी क्रियाशील है। यह केन्द्र भी दिव्यांगजनों को राष्ट्रीय गतिशील दिव्यांगजन संस्थान, कोलकाता के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के अनुसार पुनर्वास सेवाएं प्रदान कराता है।

दिव्यांगजनों के लिए संस्थान के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन दो सी.आर.सी. है, जो पटना, बिहार और अगरतला, त्रिपुरा में है। यह केन्द्र समस्त प्रकार के दिव्यांगजनों को पुनर्वास सेवाएं प्रदान कराता है। अरूणाचल प्रदेश, ईटानगर में दिव्यांगजनों के लिए एक और संयोजित क्षेत्रीय केन्द्र कार्याधीन है। यह अभी तक शुरू नही हो सका है क्योंकि अभी राज्य सरकार उस भूमि का या इमारत का अधिग्रहण कर रा.ग.दि.सं., कोलकाता को सौंपने का कार्य कर रहा है। हालाँकि इस क्षेत्र की सेवाएं नाहरलागुन में रा.ग.दि.सं. के क्षेत्रीय केन्द्र के माध्यम से प्रदान करायी जा रही है।
संस्थान के संचार अनुभाग ने "संचार और दिव्यांगता" पर गुवाहाटी और कोलकाता में दो संगोष्ठियों का आयोजन किया। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मिडिया अधिकारी इस संगोष्ठी में उपस्थित थे।

संस्थान ने सहायक अनुदान के रुप में हेड प्लान के अंतर्गत 3182.20 लाख रुपये, एडिप के अंतर्गत 425 लाख रुपये एवं सीआरसी त्रिपुरा के लिए 90 लाख रुपये प्राप्त किए। इस वर्ष सिप्डा के अंतर्गत फंड नही प्राप्त किया गया।

## क्षेत्रीय अध्याय– देहरादून :

रा.ग.दि.सं. क्षे.के. देहरादून की स्थापना सन् 1998–99 में रा.दृ.दि.स.सं., 116, राजपुर रोड, देहरादून में किया गया था। उस समय से यह क्षेत्रीय केन्द्र उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश तथा हिमाचल प्रदेश राज्यों के पड़ोसी जिलों के गतिशील दिव्यांगजनों को पुनर्वास सेवाएं प्रदान करा रहा है। यह केन्द्र दिव्यांगता एवं पुनर्वास के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं संवेदीकरण के कार्य भी करता है।

### केन्द्र प्रदत्त सेवायें:

इस वर्ष के दौरान केन्द्र में प्रदत्त सेवाओं का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से सारणीबद्ध है:

| सेवायें | 2016-17 | 2017-18 | 2018-19 |
|---|---|---|---|
| केन्द्र प्रदत्त पुनर्वास सेवायें | | | |
| कुल ( नये रोगी + पुराने रोगी) | 522 | 501 | 513 |
| नये रोगी | 313 | 261 | 268 |
| पुराने रोगी | 209 | 240 | 245 |
| प्रदत्त भौतिक चिकित्सा / व्यवसायिक चिकित्सा सेवायें | 2255 | 2030 | 2643 |
| अतिथि अस्थि रोग विशेषज्ञ द्वारा प्रदत्त परामर्श सेवायें | 77 | 224 | 256 |
| अंग एवं प्रत्यंग इकाई के माध्यम से प्रदत्त कुल सेवायें | 195 | 66 | 53 |
| वितरित सहायक अंग एवं उपकरणों की कुल संख्या | 56 | 34 | 11 |

### शिविरों के माध्यम से प्रदत्त सेवायें

| शिविरों के माध्यम से प्रदत्त सेवायें | | | |
|---|---|---|---|
| सुदूरवर्ती शिविरों की संख्या | 04 | 01 | 03 |
| कुल उपस्थित दिव्यांगजनों की संख्या | 105 | 60 | 197 |
| कुल जारी किए गए दिव्यांगता प्रमाणपत्रों की संख्या | 04 | - | 53 |

### अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम:

| प्रशिक्षण और विकास | | | |
|---|---|---|---|
| अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रम | 02 | 01 | 05 |
| कुल प्रतिभागियों की संख्या | 210 | 75 | 500 |

### अनुसंधान परियोजनाएं:

'उत्तराखण्ड क्षेत्र में यंत्रों एवं उपकरणों के प्रयोग से गतिशील दिव्यांगजनों के सामाजिक आर्थिक स्थितियों के विश्लेषण' पर एक अनुसंधान परियोजना: क्षेत्रीय केन्द्र देहरादून के एक पूर्वव्यापी अध्ययन को तेहरी गढ़वाल, उत्तरकाशी, हरिद्वार और देहरादून जिलों में चलाया गया।

## क्षेत्रीय केन्द्र, अइजोलः

क्षेत्रीय केन्द्र अइजोल की स्थापना सन् 2004 में भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के द्वारा राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, चालटलांग, अइजोल–796012 के परिसर में एक अस्थायी आवास प्राप्त कर किया गया।

**कुल लाभार्थियों की संख्याः** 1514
**कुल प्रदत्त यंत्रों एवं उपकरणों की संख्याः** 395
**दीर्घावधि पाठ्यक्रमः** डिप्लोमा इन एजुकेशन .विशेष शिक्षण (मानसिक मंदता)
**अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमः** 03

## क्षेत्रीय केन्द्र, नाहरलागुनः

रा.ग.दि.सं. क्षेत्रीय केन्द्र नाहरलागुन, अरुणाचल प्रदेश की स्थापना वर्ष 2016 में राष्ट्रीय गतिशील दिव्यांगजन संस्थान, कोलकाता के द्वारा एक किराये की इमारत में किया गया था। यह केन्द्र डी सेक्टर (पाचीन कॉलोनी के नजदीक), नाहरलागुन, पाउमपरे, अरुणाचल प्रदेश में अवस्थित है।

**कुल दिव्यांगजनों की संख्याः** 120
**जागरूकता एवं अनुस्थापन कार्यक्रमः** 02; प्रतिभागीः 93
**अभिनिर्धारण शिविरः** 02

## संयोजित क्षेत्रीय केन्द्र–पटना

दिव्यांगजनों के लिए संयोजित क्षेत्रीय पुनर्वास केन्द्र (सी.आर.सी.), पटना को वर्ष 2009 में स्थापित किया गया। इसके नये भवन का उद्घाटन 08 अगस्त, 2018 शेखपुरा, पटना में माननीय मंत्री श्री थावरचन्द गेहलोत, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा किया गया।

**कुल दिव्यांगजनों की संख्याः** 3742 (नये–1832; अनुवर्ती–1910)

सूदूरवर्ती सेवाएंः कुल 437 कुल 05 शिविरों के माध्यम से 536 यंत्रों एवं उपकरणों को प्राप्त कर दिव्यांगजन लाभान्वित हुए।
दीर्घावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमः 02

अल्पावधि प्रशिक्षण कार्यक्रमः 02; प्रतिभागी–58

अनुस्थापन कार्यक्रमः 01; प्रतिभागी–121

## संयोजित क्षेत्रीय केन्द्र, त्रिपुरा

दिव्यांगजन के पुनर्वास के लिए संयोजित क्षेत्रीय केन्द्र, त्रिपुरा राष्ट्रीय गतिशील दिव्यांगजन संस्थान (रा.ग.दि.सं.) कोलकाता के प्रशासनिक नियंत्रण के अधीन, त्रिपुरा राज्य में, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा नवम्बर, 2017 में नरसिंहगढ़, पश्चिम त्रिपुरा में स्थापित किया गया। वर्तमान में केन्द्र जुवेनाइल होम, नरसिंहगढ़, आगरतला के परिसर में सामाजिक कल्याण और सामाजिक शिक्षा विभाग द्वारा आवंटित इमारत में कार्य कर रहा है। इस सीआरसी का 8 जून, 2018 को माननीय केंद्रीय मंत्री श्री थावरचंद गहलोत, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, त्रिपुरा के माननीय मुख्यमंत्री श्री बिप्लब कुमार देब, श्रीमती सांतना चकमा, माननीय मंत्री, सामाजिक कल्याण एवं सामाजिक शिक्षा विभाग, त्रिपुरा सरकार, श्रीमती डॉली चक्रवर्ती, संयुक्त सचिव, दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, भारत सरकार की उपस्थिति में औपचारिक तौर पर उद्घाटन किया गया।

पंजीकृत दिव्यांगजनों की संख्याः 1661
संवेदीकरण सह जागरूकता कार्यक्रमः 07
शिविरः 07

**भविष्य योजनाः**

1. पाठ्यक्रम–02
2. कौशल विकास प्रशिक्षण

## वर्षानुसार लाभार्थियों के विवरण:

| वाह्य रोगी विभाग / अंतः रोगी विभाग द्वारा प्रदत्त सेवायें | 2016-17 | 2017-18 | **2018-19** |
|---|---|---|---|
| **मूल्यांकन :** | | | |
| नये रोगीजन | 22362 | 22063 | **22722** |
| अनुवर्ती रोगीजन | 27527 | 28033 | **26617** |
| **सुधारात्मक शल्य :** | | | |
| रोगियों की संख्या | 355 | 440 | **440** |
| मेजर शल्य चिकित्सा | 194 | 248 | **270** |
| माइनर शल्य चिकित्सा | 2298 | 2436 | **2006** |
| **भौतिक चिकित्सा :** | | | |
| नये रोगीजन | 12419 | 12839 | **14948** |
| अनुवर्ती रोगीजन | 32170 | 42537 | **30329** |
| सेवायें (बैठक/सेवाओं की संख्या) | 56554 | 60698 | **63244** |
| **व्यावसायिक चिकित्सा :** | | | |
| नये रोगीजन | 3056 | 3050 | **3210** |
| अनुवर्ती रोगीजन | 15081 | 16471 | **16387** |
| सेवायें (बैठक/सेवाओं की संख्या) | 46057 | 42780 | **43406** |
| **कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग :** | | | |
| कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग | 1724 | 1927 | **2337** |
| उच्च तकनीकी कृत्रिम अंग | 03 | 06 | **00** |
| पुनर्वासीय उपकरण | 242 | 311 | **267** |
| **सामाजिक आर्थिक पुनर्वास :** | | | |
| व्यवसायिक परामर्शदान एवं दिशा निर्देशन | 1417 | 1429 | **1380** |
| कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम | जारी है | 1170 | |
| सामाजिक मुल्यांकन एवं परामर्शदान | 4599 | 2764 | **3599** |
| नियोजन प्रकोष्ठ/रोजगार | 50 | 17 | |
| **नैदानिक सेवायें :** | | | |
| एक्स–रे | 7728 | 11455 | **11775** |
| पैथोलॉजिकल परीक्षण | 19096 | 31509 | **29782** |
| इ.एम.जी, एन.सी.वी. | 3727 | 4652 | **6541** |
| **पुस्तकालय एवं सूचना सेवायें :** | | | |
| लाभार्थी | 26573 | 38110 | **35337** |
| लाभार्थी सेवायें | 28020 | 37799 | **28139** |
| **सुदूरवर्ती शिविर सेवायें :** | | | |
| सहायक यंत्र/उपयंत्र वितरण किये गये | 3748 | 3482 | **4694** |
| सूचना के अधिकार अनुभाग | 50 | 57 | 86 |

# अध्याय–I

## पुनर्वास सेवाएं

संस्थान अपने निम्नलिखित इकाईयों के माध्यम से पुनर्वास सेवाएं प्रदान करता है:–

क) चिकित्सा पुनर्वास विभाग
ख) भौतिक चिकित्सा विभाग
ग) व्यवसायिक चिकित्सा विभाग
घ) कृत्रिम अंग एवं प्रत्यंग विभाग
ङ) सामाजिक आर्थिक पुनर्वास सेवा विभाग.
च) पुनर्वास नर्सिंग विभाग
छ) पुनर्वास अभियांत्रिकी विभाग
ज) विस्तारण एवं सुदूरवर्ती इकाई

### क. चिकित्सा पुनर्वास विभाग

विभाग ने दिव्यांगजनों के व्यापक पुनर्वास के लिए अन्य विभागों के साथ समन्वय किया। चिकित्सीय मूल्यांकन, मेडिकल / सर्जिकल हस्तक्षेप, चिकित्सीय व्यवधान के पर्चे, पुनर्वास सहायता / उपकरण, सामाजिक–आर्थिक पुनर्वास और रेफरल को नियमित आउटडोर (ओपीडी), इंडोर (आईपीडी) और आउटरीच शिविरों के माध्यम से प्रदान किए गए।

**मूल्यांकन क्लीनिक में दिव्यांगजनों की संख्या वर्षों में**

| ओपीडी में सेवा | 2016 - 17 | 2017 - 18 | 2018 - 19 |
|---|---|---|---|
| मूल्यांकन क्लीनिकः | | | |
| नवीन दिव्यांगजन | 22362 | 22063 | **22722** |
| पुराने दिव्यांगजन | 27527 | 28033 | **26617** |
| कुल दिव्यांगजन | 49889 | 50096 | **49339** |

इनडोर वार्ड के 50 बेड के माध्यम से इनडोर सेवाएं प्रदान की गईं, जिन्हें शल्य चिकित्सा, पुनर्वास, पैराप्लीजिया और निजी वार्डों में वर्गीकृत किया गया है।

**इनडोर वार्ड में दिव्यांगजनों की संख्या**

| वर्ष | 2016 - 17 | 2017 - 18 | 2018 - 19 |
|---|---|---|---|
| रोगियों की संख्या | 357 | 440 | **440** |

चिकित्सा विशेषज्ञों की देखरेख में भौतिक चिकित्सा, व्यवसायिक चिकित्सा, प्रोस्थेटिस्ट और ऑर्थोटिस्ट पेशेवरों द्वारा चिकित्सा और सहायक यंत्रों सहित पुनर्वास सेवाएं प्रदान की गईं। इनडोर सेवाओं का उपयोग विभिन्न पाठ्यक्रमों के छात्रों के लिए नैदानिक चिकित्सा शिक्षण में भी किया गया ।

राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (स्वास्थ्य मंत्रालय) की संबद्धता के अंतर्गत डीएनबी (पीएमआर) संचालित किया गया।

2276 शल्यक प्रक्रियाओं द्वारा विकृति को रोकने / सुधार करने हेतु अथवा उपयुक्त ऑर्थोसिस या प्रोस्थेसिस के फिट होने की सुविधा के लिए किया गया। शल्यक प्रक्रियाओं को डीएनबी (पीएमआर) विद्यार्थियों को उनकी पाठ्यक्रम आवश्यकता के अनुसार विभिन्न प्रशिक्षण हेतु प्रदर्शित किया गया।

## सुधारात्मक शल्यक मामले

| सर्वेक्षण का प्रकार | 2016 - 17 | 2017 - 18 | 2018 - 19 |
|---|---|---|---|
| छोटे (माइनर) | 2298 | 2436 | **2006** |
| बड़े (मेजर) | 110 | 194 | **270** |
| कुल | 2408 | 2630 | **2276** |

## निदान सुविधाएं

वाह्य एवं अंतः रोगियों के लिए पैथोलॉजीकल, रेडियोलॉजीकल एवं इलेक्ट्रो–डायग्नॉस्टिक परीक्षण सुविधाएँ उपलब्ध है। इस वर्ष के दौरान कुल 48098 नैदानिक सेवाये प्रदान की गई हैं।

| सेवाओं के प्रकार | 2016 - 17 | 2017 - 18 | 2018 - 19 |
|---|---|---|---|
| एक्स–रे एक्सपोजर (एक्सपोजर की संख्या) | 7728 | 11455 | **11775** |
| रोगात्मक जाँच (जाँच की संख्या) | 19096 | 31509 | **29782** |
| इलेक्ट्रो डायग्नॉस्टिक टेस्ट्स (ईएमजी, एनसीवी) | 3727 | 4652 | **6541** |
| कुल | 30551 | 47616 | **48098** |

## भौतिक चिकित्सा विभाग

विभाग का मुख्य कार्य स्नातक व स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के छात्रों का शिक्षण–प्रशिक्षण तथा विभाग में भौतिक चिकित्सा हेतु आये हुये वाह्य विभाग व अन्तःविभाग के रोगियों को चिकित्सा प्रदान करना है। इसके अतिरिक्त विभाग आवश्यकता के अनुरुप संस्थान के अन्य पुनर्वास विशेषज्ञों के साथ वाह्य पुनर्वास सेवायें प्रदान करता हैं।

### सेवाएँ

विभाग उच्च कोटि के उन्नत यंत्रों द्वारा सुसज्जित हैं। इन यंत्रों के अन्तर्गत शॉकवेव चिकित्सा इकाई, आई आर गाईडेड क्रायोफ्लो यूनिट स्केनिंग लेजर यूनिट, स्पाईनल ट्रैक्सन यूनिट, बैलेन्स ट्रेनर यूनिट डायनामिक स्टैयर ट्रेनर यूनिट, ट्रेड मिल हायड्रो चिकित्सा यूनिट आदि के साथ अन्य परम्परागत यंत्र भी प्रयोग किये जाते हैं। निम्नलिखित उप इकाईयों द्वारा विभाग के सेवाओं का विस्तार किया जा रहा है।

- इलेक्ट्रोथेरेपी इकाई
- इक्सरसाइज एवं मैनुवल थेरेपी इकाई
- एड्वान्स इलेक्ट्रोथेरेपी इकाई
- अंतःरोगी भौतिक चिकित्सा इकाई

निम्नलिखित तालिका के द्वारा रोगीजनों को वर्ष के दौरान दिये गये भौतिक चिकित्सा सेवाओं को दिखाया जा रहा है:

| पंजीकृत दिव्यांगजनों की संख्या | 2016 - 17 | 2017 - 18 | 2018 - 19 |
|---|---|---|---|
| नये रोगीजन (वाह्य एवं अंतः विभाग) | 12419 | 12839 | 14948 |
| अनुवर्ती रोगीजन (वाह्य एवं अंतः विभाग) | 32170 | 42537 | 30329 |
| कुल | 44589 | 55376 | 45277 |

लेजर थेरेपी के प्रयोग

पी एस डब्लू डी का प्रयोग

लेजर थेरेपी के प्रयोग

शॉक वेव थेरपी का प्रयोग

क्राइओथेरपी का प्रयोग

माइक्रोकरंट का प्रयोग

## भौतिक चिकित्सा वर्ष एवं पूर्ववर्ती दो वर्षों के दौरान प्रदान की गई भौतिक चिकित्सा सेवायें:

| उपइकाईयाँ | 2016 - 17 | 2017 - 18 | 2018 - 19 |
|---|---|---|---|
| शार्ट वेव डायथर्मी | 5012 | 5407 | 3769 |
| पल्स्ड शार्ट वेव डायथर्मी | 24 | 10 | 258 |
| अल्ट्रासाउण्ड थेरेपी | 7882 | 7422 | 6663 |
| एन–एम स्टिमुलेशन | 1449 | 761 | 503 |
| ट्रेंक्शन | 2564 | 2509 | 2024 |
| इन्फ्रारेड | 196 | 170 | 86 |
| क्रायोफ्लो थेरपी | 119 | 08 | 11 |
| लेजर थेरपी | 243 | 310 | 77 |
| एडवांस इलेक्ट्रिकल स्टीमुलेशन (आई एफ टी + टी ई एन एस) | 3812 | 2937 | 4055 |
| बैलेंस ट्रेनर | 1466 | 1965 | 1951 |
| ट्रेड मिल | 503 | 213 | 143 |
| इक्सरसाइज /मैनुअल थेरपी | 28298 | 30391 | 32426 |
| शोल्डर व्हील | 569 | 1595 | 1390 |
| क्वाड्रीसेप्स व्यायाम | 716 | 849 | 821 |
| स्टैंडिंग फ्रेम | 683 | 1009 | 1200 |
| वाल लैडर | 897 | 1997 | 1888 |
| डायनेमिक स्टेयर ट्रेनर | 1237 | 999 | 1832 |
| वाबल/संतुलन बोर्ड | 867 | 1200 | 1164 |
| यू वी आर | 17 | 110 | 299 |
| शॉक वेव थेरपी | – | 05 | 04 |
| स्टैटिक साइकिल | – | 209 | 302 |
| जिम बॉल (व्यायाम गेंद) | – | 577 | 1545 |
| मोइस्ट हाट पैक्स | – | 45 | 636 |
| एम डब्लू डी | – | – | 182 |
| टिल्ट टेबल | – | – | 15 |
| कुल | **56554** | **60698** | **63244** |

एससीआई दिव्यांगजन हेतु चलने का प्रशिक्षण

एम्पुटेशन दिव्यांगजन हेतु चलने का प्रशिक्षण

संतुलन प्रशिक्षण

क्वाड्रीसेप्स–टेबल व्यायाम

डायनेमिक स्टेयर ट्रेनर

एससीआई के लिए उपचारात्मक व्यायाम

वबल बोर्ड एवं व्यायाम गेंद के संतुलन प्रशिक्षण

शारीरिक भार समर्थित ट्रेड मिल प्रशिक्षण

## शैक्षणिक गतिविधियाँ:

विभाग के अन्तर्गत क्रमशः दो एवं चार वर्षों की अवधि वाली दो दीर्घावधि शैक्षणिक कार्यक्रम "भौतिक चिकित्सा में स्नातकोत्तर–ओर्थोपेडिक्स (एम.पी.टी–ओर्थो)" एवं "भौतिक चिकित्सा में स्नातक (बी.पी.टी)" संचालन किया जाता है। इस पाठ्यक्रम को पश्चिम बंगाल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त है। चार वर्षो की अवधि वाली स्नातक पाठ्यक्रम (बीपीटी) छह महीनों की अनिवार्य प्रशिक्षण के उपरांत प्रदान की जाती है।

शैक्षणिक सत्र के दौरान वर्ष में भौतिक चिकित्सा में स्नातक (बीपीटी) के कुल 52 विद्यार्थी पूर्वोत्तर क्षेत्र से नामित विद्यार्थी सम्मिलित नामांकित किये गये।

**बीपीटी में प्रवेश ब्यौरेः**

| वर्ष | प्रवेश क्षमता | प्रवेश |
|---|---|---|
| **2016** | 52 | 51 |
| **2017** | 52 | 52 |
| **2018** | 52 | 52 |

शैक्षणिक सत्र के दौरान वर्ष में भौतिक चिकित्सा में स्नातकोत्तर (एमपीटी) के कुल 06 विद्यार्थियों ओर्थोपेडिक (एमपीटी–ऑर्थो.) विशेषज्ञता के साथ नामांकित किये गये।

**एमपीटी प्रवेश विवरणः**

| वर्ष | प्रवेश क्षमता | प्रवेश |
|---|---|---|
| **2016** | 06 | 06 |
| **2017** | 06 | 06 |
| **2018** | 06 | 06 |

- संकायों/कर्मचारियों के पर्यवेक्षण में विभाग के विभिन्न उप इकाइयों में क्लीनिकल एवं शैक्षणिक गतिविधियाँ करायी जाती है।
- संस्थान के विभिन्न अल्पकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम मे स्नातकोत्तर छात्रों एवं इंटर्नस ने भाग लिया।
- रोटेशनल इंटर्नशीप पोस्टिंग होने के नाते बीपीटी के इंटर्न्स छात्रो को बी.एम.बिरला हार्ट रिसर्च सेंटर एवं लेप्रोसी मिशन कोलकाता में भी भेजा जाता है ।
- भौतिक चिकित्सा विभाग के संकाय सदस्यों के मार्गदर्शन में पश्चिम बंगाल स्वास्थ्य विज्ञान, कोलकाता को छः स्नातक प्रकरण कार्य संचालित कर प्रस्तुत किये गए।

## स्नातकोत्तर छात्रों द्वारा डेसर्टेशन कार्य

1. कमपरेटिव स्टडी ऑफ मोटर कंट्रोल एक्सरसाइज एण्ड ग्लोबल कोर स्टेब्लाइजेशन एक्सरसाइज ऑन पेन, रोम एण्ड फंक्सन इन सबजेक्ट विद क्रोनिक नानस्पेसीफिक लो वैक पेन : ए रन्डामाइज्ड क्लिनिकल ट्रायल।

2. कमपेयर दी इफेक्टीवनेस ऑफ स्कैपुलर मोबिलाइजेशन वरसेज मायोफेसियल रिलिज ऑफ सब्जसकैपुलरिज ऑन पेन, रोम, एण्ड फंक्सन इन सबजेक्ट विद क्रोनिक फ्रोजेन सोल्डर : ए रन्डामाइज्ड क्लिनिकल ट्रायल।

3. इफिकेसी ऑफ काइनेशियों–टेपिंग ओवर लीवेटर स्कैपुला ट्रिगर प्वायंट ऑन पेन, प्रेशर पेन थ्रेशहोल्ड एण्ड फक्सन इन क्रोनिक मेकनिकल नेक पेन : ए रन्डामाइज्ड क्लिनिकल ट्रायल।

4. इफोक्टिवनेस ऑफ पाइलेट्स इक्सरसाइज प्रोग्राम ऑन पेन फेक्सन एण्ड स्टेबिलोमीटर पारामीटर से इन सबजेक्स विद क्रोनिक नान स्पेसिफिक लो वैक पेन : ए रन्डामाइज्ड क्लिनिकल ट्रायल।

5. इफेक्ट ऑफ कैलकेनियन टेपिंग ऑन पेन, प्रेसर पेन क्रोसहोल्ड एण्ड फंसन इन सबजेक्ट्स विद क्रोनिक पलाटर फेसाइरिस : ए रन्डामाइज्ड क्लीनिकल ट्रायल।

6. लॉग टर्म इफिकेसी ऑफ रसियन करेंट ऑन पेन, स्ट्रेंथ ऑफ क्वाड्रिसेप्स एण्ड फंक्शन इन सबजेक्ट्स विद प्राइमरी नी आस्टीओआर्थ्राइटस : ए रन्डामाइज्ड क्लीनिकल ट्रायल।

- वर्ष 2019–20 के लिए स्नातकोत्तर प्रकरण के चार प्रस्ताव प्रस्तुतिकरण के लिए संस्थान वैज्ञानिक समिति एवं संस्थान नैतिक समिति को जमा दिया गया एवं अनुमोदन के पश्चात भौतिक चिकित्सा विभाग के संकाय सदस्यों के दिशा निर्देशन में पश्चिम बंगाल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय को जमा दिया गया।

1. कम्पेरिजन ऑफ काल्टेनबॉर्न मोबेलाइजेशन टेक्नीक वर्सस मसल एनर्जी टेक्नीक ऑन रेन्ज ऑफ मोशन, पेन एंड फन्कशन इन सब्जेक्ट विद क्रोनिक शोल्डर अधेशिव कैप्सलिटिजः अ रैंडमाईज्ड क्लिनिकल ट्रॉयल।
2. एफकसी ऑफ माइक्रोकरंट थेरपी ऑन प्रेसर पेन थ्रेसोल्ड, रेन्ज ऑफ मोशन एंड फन्कशन इन अपर ट्रैमिजियश माइओफेशियल ट्रिगर प्वाइंट्सः अ रैंडमाईज्ड क्लिनिकल ट्रॉयल।
3. एफेक्ट ऑफ मशल एनर्जी टेकनिक अलोंग विद सिगमेन्टल स्टेबिलाइजेशन एक्सरसाइज ऑन पेन, रेन्ज ऑफ मोशन एंड फन्कशन इन सब्जेक्ट विद क्रोनिक मेकानिकल लो बैक पेनः अ रैंडमाईज्ड क्लिनिकल ट्रॉयल।
4. कम्पेरिजन ऑफ माइक्रोकरंट एंड लो–लेवल लेजर थेरपी ऑन पेन, ग्रीप स्ट्रेंथ एंड फन्कशन इन सब्जेक्ट विद क्रोनिक लेटरल एपकान्डाइलिटिशः अ रैंडमाईज्ड क्लीनिकल ट्रॉयल।

## भौतिक चिकित्सा विभाग में कर्मचारियों द्वारा की गई विभिन्न गतिविधियाँः–

अन्तर्राष्ट्रीय भौतिक चिकित्सा दिवस विभाग में दिनांक 08.09.2018 को मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन उप–निदेशक (प्रशासन) एवं सहायक निदेशक (प्रशिक्षण), रा.ग.दि.सं., कोलकाता के द्वारा दीपक प्रज्जवलित करके किया गया। कार्यक्रम के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता एवं सांस्तिक कार्यक्रम में स्नातक एवं स्नातकोत्तर के छात्रों ने भाग लिया।

दिनांक 23 फरवरी, 2019 को रा.ग.दि.सं., कोलकाता के प्रेक्षागृह में "कन्शेप्ट ऑन मेनिपुलेटिव मेडिसनः रोगनिदान एवं उपचार के लिए एक ओस्टेओपैथिक दृष्टीकोण क्रमागत भौतिक चिकित्सा शिक्षण कार्यक्रम। इस कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. ए. विश्वास, निदेशक रा.ग.दि.सं., कोलकाता के द्वारा किया गया। डॉ. संजय सरकार, एमपीटी, एमएस(जेरो), पीएचडी, कॉन्कोर्डिया विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य, सेंट. पाल, यूएसए इस कार्यक्रम के रिसोर्स पर्सन थे।

श्री. प्रवीण कुमार, सहायक आचार्य (भौ.चि.) का दिनांक 3 एवं 4 जून 2018 को पटना में पूर्वी भारत के तंत्रिकातंत्र वैज्ञानिक सम्मेलन द्वारा आयोजित एएनइआइएमआइडीसीओएन –2018 में व्याख्यान देते हुए

❖ विभाग से सभी कर्मचारी सदस्यो द्वारा सक्रिय रुप से संस्थान में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों जैसे विश्व दिव्यांगजन दिवस, स्वच्छ भारत अभियान, गणतंत्र दिवस, हिन्दी दिवस आदि में भाग लिया गया।

## शोध पत्रः

❖ भौतिक चिकित्सा विभाग के संकायो/कर्मचारियों द्वारा निम्नलिखित शोध पत्र राष्ट्रीय/अंतराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित किये गयेः–

1. सरकार बी. मंगलम, ए.के. सहाय . एफिकैसी ऑफ मसल एनर्जी टेक्निक एज कॉम्पेअर टू मायोफेशियल ट्रिगर प्वाइंट रिलीज इन क्रोनिक प्लान्टर फैसाइटिजः अ डबल ब्लाइंड रैन्डोमाइज्ड क्लीनिकल ट्रायल आइएनटी जे हेल्थ एससीआई आरईएस. 2018; 8(6):128–136.
2. सरकार एन, सरकार बी, कुमार पी. इ टी एएल. एफिकैसी ऑफ काइनसियो–टैपिंग ऑन पेन, रेन्ज ऑफ मोशन एंड फन्क्शनल डिसेबिलिटिज इन क्रोनिक मेकैनिकल लो बैक पेनः अ रैन्डोमाइज्ड क्लीनिकल ट्रायल आइएनटी जे हेल्थ एससीआई आरईएस. 2018; 8(7):105–112.
3. पटेल एल, सरकार बी, कुमार पी इटी एएल. नोर्मेटिव वैल्यूज ऑफ स्टार इग्जकर्जन बैलेंस टेस्ट इन यांग एडल्ट्सः एक्रोश सेक्शनल स्टडी. आइएनटी जे अडीवी. आरइएस. 2018; 6(8): 206–214.
4. लाहा के, सरकार बी, कुमार पी इटी. एएल. एफिकैसी ऑफ हिप एबडक्टर एंड एक्सटेंसर स्ट्रैंथेनिंग ऑन पेन, स्ट्रेंथ एंड लावर एक्सट्रेमिटी फन्क्शन इन पीरीफोर्मिश सिंड्रोमः अ रैन्डोमाइज्ड क्लिनिकल ट्रायल आइएनटी जे हेल्थ एससीआई आरईएस. 2018; 8(9):80–88.
5. अल्घादिर एएच. अल–अईसा ई एस, अनवर एस, सरकार बी. रिलायबिलिटी, वैलिडिटी एंड रेस्पोंसिवनेश ऑफ थ्री स्केल्स फोर मिज्यूरिंग बैलेंस इन पेशेंट्स विद क्रोनिक स्ट्रोक. बीएमसी न्यूरोलॉजी (2018) 18:141.

## एमपीटी/बीपीटी के विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक उपलब्धियाँः

एमपीटीः सुश्री. श्रेया दास ने प.बं.स्वा.वि.वि. द्वारा संचालित एमपीटी अंतिम परीक्षा–2018 में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

### विद्यार्थियों की अन्य गतिविधियाँः

विद्यार्थियों ने दिनांक 9 एवं 10 जून 2018 को बीएचयू, बनारस में आयोजित "काशी फियोकॉन 2018", भौतिक चिकित्सकों के प्रगतिशील भौतिक चिकित्सा कल्याण संघ के वार्षिक समारोह, 21 एवं 22 अक्टूबर, 2018 को कलिमपोंग, पश्चिम बंगाल मे आयोजित पश्चिम बंगाल शाखा, 15 एवं 16 दिसंबर, 2018 को पीजीआइएमइआर, चंडीगढ में आयोजित सम्मेलन "फिजियोकॉन चंडीगढ 2018" एवं दिव्यांगता एवं सामाजिक समावेश के राष्ट्रीय सम्मेलन . आइआइटी गुवाहाटी के सहयोग से आइआइटी गुवाहाटी में दिनांक 10 एवं 11 जनवरी, 2019 को रा.ग.दि.सं. कोलकाता द्वारा आयोजित द रोल ऑफ टेक्नोलॉजी (प्रद्यौगिकी की भूमिका) जैसे विभिन्न शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लिया।

श्री. कृष्णेंदु लाहा एमपीटी के दूसरे वर्ष के विद्यार्थी ने पेपर प्रस्तुतीकरण में दिनांक 9 एवं 10 जून 2018 को बीएचयू, बनारस में आयोजित "काशी फियोकॉन 2018" में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

श्री. निलंजन सरकार एमपीटी के दूसरे वर्ष के विद्यार्थी ने पेपर प्रस्तुतीकरण में दिनांक 9 एवं 10 जून 2018 को बीएचयू, बनारस में आयोजित "काशी फियोकॉन 2018" में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

श्री. सागर कुमार गौदा बीपीटी के दूसरे वर्ष के विद्यार्थी ने दिनांक 21 एवं 22 अक्टूबर, 2018 को कलिमपोंग, पश्चिम बंगाल मे आयोजित पीपीटीडब्लूए–पीटीसीओएन 2018 में इलेक्ट्रोथेरपी–प्प के विषय में उत्कृष्ठ प्रदर्शन के लिए पुष्पल कुमार मित्र मेमोरियल अवार्ड प्राप्त करते हुए।

श्री. निर्मालेंदू बेज, बीपीटी के प्रथम वर्ष के विद्यार्थी ने दिनांक 21 एवं 22 अक्टूबर, 2018 को कलिमपोंग, पश्चिम बंगाल मे आयोजित पीपीटीडब्लूए–पीटीसीओएन 2018 में इलेक्ट्रोथेरपी–प्प के विषय में उत्कृष्ठ प्रदर्शन के लिए पुष्पल कुमार मित्र मेमोरियल अवार्ड प्राप्त करते हुए।

श्री. संकल्प कुंडू, बीपीटी के प्रथम वर्ष के विद्यार्थी ने दिनांक 21 एवं 22 अक्टूबर, 2018 को कलिमपोंग, पश्चिम बंगाल मे आयोजित पीपीटीडब्लूए–पीटीसीओएन 2018 में इलेक्ट्रोथेरपी–I के विषय में उत्कृष्ठ प्रदर्शन के लिए पुष्पल कुमार मित्र मेमोरियल अवार्ड प्राप्त करते हुए।

श्री. सागर कुमार गौदा, श्री. संकल्प कुंडू एवं निर्मलेंदू बेजे ने दिनांक 21 एवं 22 अक्टूबर, 2018 को कलिमपोंग, पश्चिम बंगाल मे आयोजित पीपीटीडब्लूए–पीटीसीओएन 2018 में इंटर–कॉलेज क्विज प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करते हुए।

16 दिसम्बर, 2018 को आयोजित टाटा स्टील कोलकाता मैराथन में 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

3 फरवरी, 2019 को आयोजित आईडीबीआई मैराथन में 27 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

श्री अनिल कुमार ओराओन एमपीटी के द्वितीय वर्ष के विद्यार्थी ने दिनांक 15 एवं 16 दिसंबर, 2018 को पीजीआइएमइआर, चंडीगढ में आयोजित "फिजियोकॉन चंडीगढ 2018" सम्मेलन में पेपर प्रस्तुतीकरण में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

भौतिक चिकित्सा के भारतीय समिति(आईएपी), पश्चिम बंगाल शाखा द्वारा 24 फरवरी 2019 को कोलकाता में आयोजित तृतीय बंगाल फिजियो क्रिकेट लिग (पीसीएल) में भौतिक चिकित्सा के विद्यार्थी (एमपीटी/बीपीटी) रनर अप ट्रॉफी के साथ। पश्चिम बंगाल से कुल आठ भौतिक चिकित्सा कॉलेज ने इस टूर्नामेंट मे भाग लिया।

## व्यावसायिक चिकित्सा विभाग :

व्यावसायिक चिकित्सा विभाग मुख्य रुप से ओपीडी, आईपीडी और आउटरीच शिविरों में भाग लेने वाले व्यक्तियों के लिए शिक्षण, अनुसंधान और व्यावसायिक उपचार में कार्यरत है। दिव्यांगजनों को व्यवसायिक चिकित्सीय सेवाएँ इनडोर, आउटडोर और आउटरीच सेवाओं के प्रशिक्षण के माध्यम से दिया गया। इन क्षेत्रों में मानव संसाधनों की भी विकास किया गया एवं दीर्घकालिक एवं अल्प कालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा उन्हें प्रशिक्षित किया गया तथा व्यावसायिक चिकित्सको के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम चलाया गया।

उन्नतशील दिव्यांगता के शिशुओं के लिए एनडीटी आधारित चिकित्सा

लेप्रेसी मरीज को ईएमजी बॉयोफिडबैक द्वारा मसल कन्ट्रैक्शन कराते हुए

| व्यावसायिक चिकित्सा विभाग मे पंजीकृत रोगियों की संख्या | 2016 - 17 | 2017 - 18 | 2018 - 19 |
|---|---|---|---|
| नये रोगी | 3056 | 3050 | **3210** |
| अनुवर्ती रोगी | 15081 | 16471 | **16387** |
| कुल | 18137 | 19521 | **19597** |

विभाग में दिव्यांगजनों के लिए उनके दैनिक जीविका के गतिविधियों में कार्यात्मक प्रदर्शन को उन्नत करने के लिए आधुनिक यंत्रों के साथ मूल्यांकन एवं व्यवसायिक चिकित्सा के लिए एक व्यैक्तिक एवं तदनुकूल पद्धति का प्रयोग किया गया, इन सेवाओं को कार्य स्थान के सामर्थ्य को उन्नत एवं औद्योगिक संरचना में व्यक्ति–दिवस के क्षतियों को कम करने के लिए कार्य मूल्यांकन, सुधार के लिए भी प्रयोग किया गया।

अनुकूल एवं सहायक यंत्रों के विकास एवं बनावट व्यावसायिक चिकित्सा विभाग की अन्य महत्वपूर्ण कार्य है। दिव्यांग रोगियों की सेवाओं के अलावा दीर्घ एवं अल्प अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा मानव संसाधन विकास, चिकित्सकों रिफ्रेशर पाठ्यक्रम एवं अनुसंधान कार्यक्रम भी संचालित किये गये।

## विभाग के क्रियाकलाप निम्न उप इकाईयों के माध्यम से प्रदान किये गये

बाल चिकित्सक (व्यवसायिक चिकित्सा)
संवेदक समाकलन उपचार इकाई
एडीएल प्रशिक्षण
स्प्लिंट एवं अनुकूलित उपकरण
हस्त चिकित्सा इकाई
इ.एम.जी बॉयो–फिडबैक
अंतर्विभाग व्यवसायिक चिकित्सा सेवायें
कम्प्यूटरकृत हस्त मूल्यांकन

आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यावसायिक चिकित्सा में उपचारात्मक व्यवधान (सम्पूर्ण शरीर कंपन एवं बाल्टीमोर उपचारात्मक उपकरण)